अगस्त 15, 2011

प्रिय सहकर्मियो,

स्वतंत्रता दिवस के 64 वें वार्षिकोत्सव के महत्त्वपूर्ण अवसर पर मैं आप सभी एवं आपके परिजनों को हार्दिक बधाई देता हूँ । इस महान देश के विषय में आपसे बात करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है साथ ही मैं उन सभी योद्धाओं को अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूँ जिन्होंने भारत को स्वतंत्र करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी । 100 करोड़ से भी अधिक लोगों के साथ भारत विश्व का दूसरा सबसे धनी आबाजी वाला देश है । भौगोलिक दृष्टि से यह 3,500 मील की तटीयरेखा, पर्वत श्रृंखला जिसमें हिमालय भी शामिल है, विस्तृत उपजाऊ कृषि भूमि, विविध संस्कृतियाँ और यूरोप से भी प्राचीन सभ्यता से समाविष्ट है। इतना ही नहीं, यह हिन्दु, बैद्ध और जैन धर्म का जन्म स्थल भी है। लगभग 2500 ई पू इसके उत्तर पश्चिम क्षेत्र में इन्डो आर्य लोग बस गए थे । इस देश पर कई आक्रमणकारियों ने आक्रमण किया । आक्रमणकारियों में महान सिकन्दर भी थे जिन्होंने 327 ई पू में भारत पर आक्रमण किया और उसके बहुत समय बाद पारसियों ने आक्रमण किया और भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया। सोलहवी शताब्दी के प्रारंभ में युरोपियों ने भी भारत में प्रवेश करने लगे । ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी सूरत, बम्बई और कलकत्ते में अपने व्यापारिक केन्द्रों के साथ शीघ्र ही इन क्षेत्रों को अपने अधिकार में कर लिया और पोर्तगाली और डच व्यापारियों को बेदखल कर दिया । इस तरह ब्रिटिश राज बना और भारत की विशाल कच्ची सम्पदा पश्चिम को ले गए । महात्मा गॉधी ने संगठित रूप से अंग्रेजी शासन का विरोध किया । गॉधी ने एक सत्याग्रह अभियान चलाया जो बाद में अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए प्रतिरूप बन गया जो सन् 1947 को हमें स्वतंत्रता दिलाया । इसी उद्देश्य से आज हम 64वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं ।

स्वतंत्रता के बाद देश ने समाजवादी पथ का अनुसरण किया । 1991 में भारत सरकार ने कई आर्थिक सुधारों पर ध्यानकेन्द्रित किया । विदेशी निवेश और उद्यमकर्त्ताओं पर प्रतिबंद हट जाने के कारण भारत की आर्थिक स्थिति में तेजी से वृद्धि होने लगी । आज बैगालोर, हैदराबाद, पुणे, भुवनेश्वर जैसे शहर उच्च प्रौद्योगिकी विकास के केन्द्र बन गए हैं ।

आधुनिक भारत को कई विकट चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। पूर्व दशक के तीव्र आर्थिक विकास दर के बावजूद 40 प्रतिशत भारतीय अभी भी गरीबी रेखा (70 रुपये से भी कम) के नीचे हैं, इनमें से अधिकाशत: 680 हजार गावों में रहते हैं लेकिन वहीं मोबाइफोन धारकों की संख्या जो 2000 में तीस लाख थी जां 2005 में बढ़कर 10 करोड़ हो गई, 1991 में टेलीविजन का 1 चैनेल था जो बढ़कर अब 150 से भी अधिक चैनेल हो गए हैं । भारतीय अर्थ व्यवस्था 1991 से ही 6 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ रही है । आर्थिक विकास दर में केवल चीन ही हमसे आगे है । अभी भी हमारे देश में 120 करोड की आबादी में मात्र 3.5 करोड़ करदाता हैं । केवल 10 प्रतिशत कर्मचारी संगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं । हमारे अभियांत्रिक महाविद्यालों से प्रत्येक वर्ष 10 लाख अभियांत्रिक स्नातक उत्तीर्ण होते हैं जो अमेरिका तथा यूरोप, दोने देशों के कुल अभियांत्रिक स्नातकों की संख्या का दस गुणा है, फिर भी देश के 35 प्रतिशित नागरिक अभी भी अशिक्षित हैं तथा दशक में पहली बार विकास दर में तीव्र ह्रास हुआ है तथा घाटा बढ़ गया ।

इन सारी चुनौतियों के बावजूद किसी प्रकार विविध प्रकृति के राष्ट्रीय माँगों को पूरा किया जा सके जिसमें शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य, आवास से कृषि आदि शामिल हैं । किसी को भी आश्चर्य होगा कि यहाँ हमारे जैसा एक छोटा सा संस्थान कैसे प्रासंगिक है । प्रतिस्पर्धात्मक बने रहने के लिए हमें आधारभूत संरचनाएं तथा अत्याधुनिक सुविधाएं तक अपनी पहुँच बनानी होगी । प्रश्न यह है कि क्या हम अपने अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्रीय नेतृत्व पा सकते है ? उत्तर “ हाँ ” है लेकिन उस ऊचॉई तक पहुँचने के लिए हमे बड़ी सोच विकसित करनी होगी । हमारा कार्यक्षेत्र भली भॉति निर्धारित है । इसे बढ़ाने के अलावा हमारे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है । प्रश्न यह है कि कैसे हम अपनी विकास गति को बनाए रखना है जो हमने अब तक बनाये रखी हैं । मुझे पूर्ण विस्वास है कि सफलता हमारी मुट्ठी में हैं, अगर हम यह खोज पाएं कि किस तरह कम से कम समायोजन द्वारा संगठन का पुनर्गठन किया जा सके तथा अकुशलता दूर की जा सके । यहॉ मेरे कार्यसूची के प्रथम 10 मद हैं जिन्हें हमें हमारी भावी सावधिक कार्य योजना के रूप में अवश्य पूरा करना है ।

1 12 वीं योजना अनुसंधान विचारों को सुनिश्चित करना ।

2 पाठ्यक्रम ढॉंचा का पुनरीक्षण द्वारा शैक्षिक गतिविधियों से सुदृढ़ करना क्योंकि हम अब छात्रों के तीसरे बैच का स्वागत करने जा रहे हैं ।

3 भारत में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करने के लिए कुछ उभरते वैज्ञानिकों को समर्थन एवं प्रोत्साहन । उनके हित के लिए हमें अनुकूल एवं प्रेरणात्मक वातावरण तैयार करना चाहिए जिससे कि महान विचारों का सृजन हो सके और दृढ़ संकल्प के साथ उन्हें पूरा किया जा सके ।

4 इस वर्ष हमनें 150 छात्रों को ग्रीष्म इन्टर्न के रूप में प्रशिक्षित किया । परंतु संस्थान के हित को प्राथमिकता देते हुए एक विभिन्न उद्दे य के साथ हमें इस संख्या को बनाये रखाना चाहिए । हम स्थानीय अभियांत्रिकी महाविद्यालयों से चतुर्थ वर्ष के कुछ छात्रों को उनकी बी टेक परियोजनाओं के लिए लेंगे ।

5 अब समय आ गया है कि कोरापुट में आउटरीच केन्द्र की स्थापना के लिए एक ठोस प्रस्ताव तैयार किया जाए और श्रमशक्ति के नियोजन के लिए भागीदारी प्रारुप बनाया जाए ।

6 हमें परिसर परिवेश, पर्यावरण एवं सुरक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए । हमें परिसर को तम्बाकूम ुक्त क्षेत्र बनाना है और पॉलिथीन-थैले के उपयोग को बन्द करना होगा ।

7 हमें शनिवारों को व्यक्तियों के द्वारा व्यतीत किए गए संचित समय का अभिलेख रखना होगा और उचित ढंग से उनके योगदान को मान्यता देना होगा ।

8 भागीदारी प्रबंधन और साझा उत्तरदायित्व सफल संगठन की विशेषताएं हैं । हम इस पथ का अनुसरण कर रहे हैं परंतु जब असंगतियाँ आती हैं तो हमें सतर्कता बर्तनी पड़ेगी ।

9 हमें एक सामुदायिक केन्द्र, एक नया टेनिस कोर्ट, एक दिवा अनुरक्षण केन्द्र और यदि संभव हो तो बॉस के बगीचे के अंदर एक जॉगिंग ट्रैक के लिए योजना बनानी चाहिए । हमें मंदिर का निर्माण कार्य को भी पूरा करने की शपथ लेनी चाहिए ।

10 अंततः हमें स्वर्ण जयंती समारोह के लिए योजना प्रारंभ कर देना चाहिए जो कि अब से ठीक 971 दिन शेष है ।

मैं आइएमएमटी के साथ पिछले 5 वर्षों से जुड़ा हुआ हूँ । इतने लंबे समय तक आइएमएमटी का नेतृत्व करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है और आप जानत हैं कि कई घटनाओं ने मुझे इस संस्थान से बॉध रखा है । मेरा तन और मन पुनरोद्धार की अवस्थाओं से गुजर रहा है । मेरी दृष्टि से हमारा संस्थान मधुमक्खियों का झुंड है जो अंदर से स्थिर और विरोधाभास प्रतीत होता है परंतु बाहर से बहुत ही खूबसूरत तथा सुसंगति से आगे बढ़ने वाला प्रतीत होता है । यह सुसंगति हमारे कार्य निष्पादन में स्वत: ही परिलक्षित होती है । प्रत्येक वर्ष हम बीते वर्ष की उपलब्धियों को पीछे छोड कर आगे बढ़ जाते हैं यही कारण है कि हमारा संस्थान कार्यनिष्पादन करने वाले संस्थानों में शीर्ष स्थानों पर रहने वालों में से एक है जैसे कि महानिदेशक, सीएसआइआर ने घोषणा की है । इस उपलब्धि का सारा श्रेय हमारे वैज्ञानिकों, कर्मचारियों और छात्रों को जाता है । मुझे आपको यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि शिखर पर बने रहने के लिए हमें एक विशेष प्रकार की आशा एवं दृढ़ता के साथ कार्य करना होगा अन्यथा बहुत शीघ्र ही पतन हो जाएगा । यथा इस संस्थान का भविष्य सर्वदा ही उज्ज्वल दिखता है मैं अपने भाषण को सर मोहम्मद इकबाल के सारे जहाँ से अच्छा शीर्षक गीत के साथ समाप्त करना चाहता हूँ।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तान हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्तान हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माना हमारा

जय हिन्द

.